पर्यावरण और मानव का संबंध, संघर्ष और समझौता

रेनू कुमारी[1], प्रदीप कुमार[2]
[1]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, लॉर्डस यूनिवर्सिटी, अलवर (राजस्थान) भारत
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, लॉर्डस यूनिवर्सिटी, अलवर (राजस्थान) भारत

सारांश

पर्यावरण उन सभी भौतिक, रायायनिक एवं जैविक कारकों की इकाई है जो किसी जीवधारी आबादी को प्रभावित करते हैं। जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि और आकाश इन तत्वों से मिलकर दुनिया का निर्माण हुआ है। मनुश्य इन्हीं तत्वों से मिलकर बना है। मनुष्य का पहला कर्त्तव्य पर्यावरण की रक्षा करना है। प्राकृतिक संसाधनों का निरंतर बिना सोचे–समझे दोहन करना और जंगल काटना हमें विनाश की ओर लेकर जा रहा है। बारिश की कमी की वजह से सूखा पड़ रहा है। बाढ़, सुनामी आदि की मार झेलनी पड़ रही है। मानव और पर्यावरण के बीच पूरक सम्बन्ध है। यदि पर्यावरण में उपस्थित एक घटक को हानि पहुँचती है तो सभी को पहुँचती है। पर्यावरण बनाने के लिए लकड़ी, केरोसिन, कोयला, प्लास्टिक से बनी चीजों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएँ जिससे पर्यावरण दूषित न हो। पर्यावरण दिवस पर लोगों को जागरूक करना।

मुख्य बिंदूः पर्यावरण, प्राकृतिक संसाधन, जैविक, अजैविक, शारीरिक, मानसिक, प्रौद्योगिकीय, संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक, नगरीकरण, वायुमण्डल, परतें, वनस्पति, समझौता, गैसें।

I अर्थ व भूमिका

पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों परि़आवरण से मिलकर बना है। जिसमें 'परि' का मतलब है हमारे आसपास अर्थात जो हमारे चारों ओर है और 'आवरण' जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है। पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासयनिक एवं जैविक कारकों की कुल इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा पारितंत्रिय आबादी को प्रभावित करते है तथा उनके रुप, जीवन और जिविता को तय करते है।

II पर्यावरण और मानव संबंध

मनुष्य का प्राकृतिक पर्यावरण के साथ गहरा संबंध है। जल, वायु, पृथ्वी अग्नि और आकाश इन तत्वों से मिलकर दुनिया का निर्माण हुआ है इससे अलग कुछ भी नहीं है और मनुष्य इन्हीं तत्वों से ही उत्पन्न हुआ है। मनुष्य को पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्राणियों में श्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि ईश्वर ने सोचने समझने की शक्ति मानव जाति को ही प्रदान की है। ''अतः पहला कर्त्तव्य मानव का ही है कि वह पर्यावरण की रक्षा करे।'' उसे प्रदूषित और असंतुलित होने से बचाना। परंतु हम देखते हैं कि इस भौतिकतावादी युग में मनुष्य सब–कुछ भूलकर सिर्फ प्रदूषण में वृद्धि कर रहा है। प्राकृतिक संसाधनों का निरंतर बिना सोचे समझे दोहन करना ओर जंगल काटना

हमें विनाश की ओर लेकर जा रहा है। जंगलों को काटना ओर सीमेंट के जंगलों का निर्माण अर्थात बड़ी–बड़ी इमारते बनाना। हमारे पर्यावरण को बिगाड रहा है। जिससे बारिश में कमी आ गई है। कहीं सूखा पड़ रहा है बाढ, सुनामी आदि की मार झेलनी पड़ रही है। मानव और पर्यावरण के बीच पूरक सम्बन्ध है, दोनों एक–दूसरे को प्रवाहित करते हैं ओर प्रभावित भी होते हैं। मानव और पर्यावरण के बीच का सम्बन्ध समय ओर स्थान के साथ बदलता रहता है। क्योंकि विश्व के कुछ क्षेत्रों में मानव पूर्णतः प्रकृति से प्रभावित है और कुछ क्षेत्रों में प्रकृति को प्रभावित करता है। यह तकनीकों के कारण होता है।

मानव पर्यावरण के संबंध में सटीक विचार धारा मानव पारिस्थिति की संकल्पना सर्वप्रथम **H.H. बेरोज** ने प्रतिपादित किया ''जिसमें उन्होंने मानव एवं उसके जैविक, अजैविक, पर्यावरणीय तत्वों की अन्त क्रियाओं में पास्परिक संबंधों की बात की तथा यह भी बताया कि अस्तित्व के लिए संघर्ष आवश्यक है।

यदि पर्यावरण में उपस्थित किसी एक घटक को हानि होती है तो दूसरे को हानि पहुँचना स्वभाविक है। एक अच्छे जीवन की कल्पना एक अच्छे वातावरण ओर शुद्ध पर्यावरण की वजह से होता है। मनुष्य के सभी प्राकृतिक गुण यथा जन्म, वृद्धि स्वास्थ्य, मृत्यु आदि प्राकृतिक पर्यावरण से उसी तरह प्रभावित तथा नियंत्रित होते है जैसे कि पर्यावरण के अन्य जीवों के प्राकृतिक गुण प्रभावित व नियंत्रित होते है परन्तु मानव अन्य प्राणियों की तुलना में शारिरीक, मानसिक एवं प्रौद्योगिकीय स्तर पर सर्वाधिक विकसित प्राणी है अतः यह प्राकृतिक पर्यावरण को बड़े स्तर पर परिवर्तित करके अपने अनुकूल बनाने में समय भी है।

''मानव संस्कृति तथा सभ्यता के प्रारम्भि काल को 'प्रागैतिहासिक' काल कहते हैं।'' इस काल में मानव प्राकृतिक पर्यावरण का एक अभिन्न भाग तथा घटक या आदि मानव 'भौतिक मानव के रुप में था क्योंकि उसकी आधारभूत माँग योजना तक ही सीमीत थी जिसे वह जंगलों से फल, फूल तथा कन्द मूल एकत्रित करके एंव जंगली जानवरों के शिकार से प्राप्त करता था। आग के अविष्कार के साथ उसने माँस पकाकर खाना प्रारम्भ कर दिया। इस काल में मानव–पर्यावरण संबंध मैत्रीपूर्ण थे क्योंकि ''इस काल में मनुष्य द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण में किए गए परिवर्तन प्रकृति द्वार आत्मसात कर लिए जाते थे।'' समय के साथ–साथ मनुष्यों ने पशुओं को पालना भी सीख लिया। पशुपालन दो उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आरम्भ हुआ

- माँस के लिए
- दूध के लिए

''यह पर्यावरण काल था जिसमें पशुओं के लिए स्थायी बाडे बनाने के साथ–साथ पशुओं को विभिन्न चारगाहों पर चराया जाता था। इस काल में भी मानव पर्यावरण संबंध मैत्रीपूर्ण ही थे।''

पौधापालन एवं कृषिकाल में पौधों को भोजन के लिए पालना मनुष्य द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण के जैविक, संघटकों पर विनय हासिल करने का महत्वपूर्ण प्रयास माना जाता है। पोधों के पालन के माध्यम से प्राचीन कृषि के विकास हुआ। इसके साथ ही सामाजिक वर्गो तथा संगठनों का आविर्भाव हुआ जिस कारण प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं का अभ्युदय हुआ ओर मानव ने स्थायी निवास करना प्रारम्भ कर दिया। इसके साथ ही मनुष्य ने निजी पर्यावरण का किया जिसे सांस्कृतिक पर्यावरण का किया जिसे सांस्कृतिक पर्यावरण कहते है। इस काल में मनुष्य ने पर्यावरण में कोई महत्वपूर्ण विनाश तो नही हुआ परन्तु पर्यावरण में परिवर्तन अवश्य हुए।

विज्ञान एवं अत्यधिक विकसित एवं प्रोद्यौगिकी के प्रादुर्भाव के साथ ओद्यौगिक का सवेरा हुआ।

(क) रेटंजेल के अनुसार–''समान दिशाएँ समान जीवन शैली को जन्म देती है।'' इसी आद्योगीकरण के साथ मनुष्य तथा पर्यावरण के मध्य शत्रुतापूर्ण सम्बन्ध की शुरूआत भी होती गई। मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण एवं अँधाधुँध विदोहन कर भयावह व जानलेवा पर्यावरण समस्याओं का प्रादुर्भाव किया है। मानव और पर्यावरण एक–दूसरे पर आश्रित हैं। जनसंख्या वृद्धि, नगरीकरण, तकनीकी क्षेत्र की प्रस्तुति से पर्यावरण ह्रास हुआ है। प्रदुषण की उत्पत्ति हो गई ळें

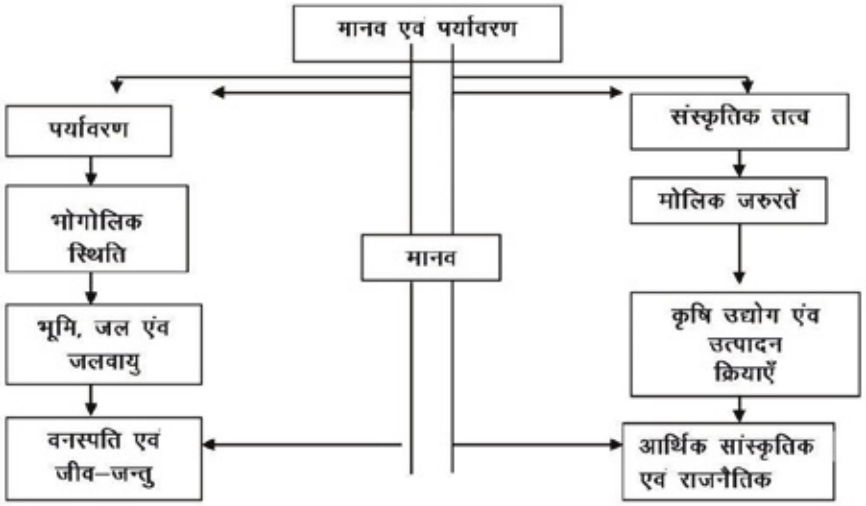

III संघर्ष एवं समझौता

पर्यावरण बचाने के लिए लकड़ी, केरोसिन, कोयला, प्लास्टिक से बनी चीजों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। पर्यावरण दूषित होने के कारण हमारे वायुमण्डल का तापमान बढ़ना, ओजोन परत की हानि, भूमि का अपव्यय, जल, वायु तथा हमारे आस–पास के परिवेश क दूषित होना एवं वनस्पतियों का विनष्टा होना, मानव का अनेक नए रोगों से आक्रान्त होना अन्य बहुत से कारण है। इसे बचाने के लिए हमें ज्यादा से ज्यादा पेड लगाने चाहिए। उद्योगों से निकलने वाले दूषित पदार्थों का सही तरह से निस्तारण करना होगा। पर्यावरण दिवस पर लोगों को जागरूक करना होगा।

(क) जेनेवा प्रोटोकॉल 1925– ''रासायनिक एंव जैविक हथियारों को निषेध करने के लिए लिए 1925 में जेनेवा प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किया गया।''

(ख) स्टॉकहोम समझौता 1972– संयुक्त संघ के तत्वावधान में 5 जून 1972 को स्टॉकहोम में पर्यावरण सुरक्षा हेतु विश्वव्यापी स्तर पर प्रथम प्रयास किया। इस सम्मेलन में इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण के प्रति राजनीतिक चेतना जाग्रत करने तथा आम जनता को प्रेरति करना था। इस सम्मेलन में पर्यावरण संकट को दूर करने हेतु 25 सूत्री घोषणापत्र तैयार किया गया।

(ग) साइट्स 1973– इसे वाशिंगटन समझौता भी कहा जाता है। वन्यजीवों ओर वनस्पतियों की संकटापन्न प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर देशों के बीच एक समझौता है। यह समझौता जीवों तथा उनके अंगों आदि के अंतरास्ट्रीय व्यापार को प्रतिबंधित करता है।

(घ) आधारी समझौता 1989– ''खतरनाक निर्गमी कचरों के सीमापार शवागमन और उनके निपटारे के लिए आधारित समझौता हुआ।''

(च) वियना समझौता 1985– यह ओजोन परत के संरक्षण के लिए एक बहुपक्षीय पर्यावरण समझोता है। इस पर 1985 के वियना सम्मेलन में सहमति बनी ओर 1988 में यह लागू किया गया। ये ओजोन क्षरण पदार्थों पर प्रथम सार्थक प्रयास था।

(छ) मोन्ट्रियल समझौता 1987– ''ये प्रोटोकॉल ओजोन परत को क्षीण करने वाले पदार्थों के बारे में अंतर्राष्ट्रीय संधि है। जो ओजोन संरक्षण करने के लिए चरणबद्ध ढंग से उन पदार्थों का उत्सर्जन रोकने के लिए बनाई गई है। जो

ओजोन परत को क्षीण करने के लिए उत्तरदायी है जैसे–CFC'S, HCFC'S आदि।''

(ज) किगली समझौता 2016–खतरनाक ग्रीन हाउस गैसों रुप से HFC'S/HCFC'S के उत्सर्जन में कटोती हेतु समझोता है। यह समझोता मुख्यतः ओजोन परत संरक्षरण से संबंधित मांट्रियल प्रोटोकॉल में संशोधन है जो कि 'साझी किंतु भिन्न उत्तरदायित्व' की अवधारणा पर आधारित है ओर ये संशोधन कानूनी रुप से बाध्यकारी है और 1 जनवरी 2019 से लागू हुआ। यह शोध पत्र लिखकर बडी खुशी हुई इससे जन–जन में पर्यावरण के प्रति उत्तेजना बढ़ेगी। इस उत्सव द्वारा मेरा शोध पत्र सभी तक पहुँचे, ताकि सभी पर्यावरण के प्रति उजागर हो सके, सभी पर्यावरण को बचाएँ, उनकी रक्षा करें।

IV निष्कर्ष

मानव और पर्यावरण एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों में मैत्रीपूर्ण संबंध है। मानव और पर्यावरण का संबंध समय और स्थान के साथ बदलता रहता है। पर्यावरण दूषित होने से मानव जीवन पर गहरा असर पड़ता है। इसलिए हमारा लक्ष्य है पर्यावरण को बचाना, जन–समाज की रक्षा करना। पर्यावरण और मानव एक–दूसरे से प्रभावित होते हैं। इसलिए हमारा कर्त्तव्य पर्यावरण को बचाना है।

संदर्भ ग्रंथ

[1] मनुष्य और पर्यावरण – इरफान हबीब

[2] पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी – आर. राजगोपाल

[3] पर्यावरण शिक्षा – डॉ0 एम0के0 गोयल

[4] मानव अधिकार और पर्यावरण संतुलन – प्रो0 हरिमोहन

[5] भारतीय पर्यावरणीय आचार शास्त्र – ओमप्रकाश मेहता

[6] पर्यावरण प्रदूषण – वासुदेव प्रसाद

[7] पर्यावरण एवं पर्यावरणीय संरक्षण विधि रूपरेखा – सैन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन

[8] पर्यावरणीय संकट – डॉ0 विश्वम्भर प्रसाद सती

[9] पर्यावरणीय मुद्दे – डॉ0 एम0के0 गोयल